eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

पर्यावरण का मानव समाज पर प्रभाव

[1]डॉ0 आर0 के0 त्रिपाठी
[1]सह प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, डी0बी0एस0 पी0जी0 कालेज, कानपुर।

Received: 20 Nov 2020, Accepted: 30 Nov 2020, Published with Peer Review on line: 31 Jan 2021

Abstract

पर्यावरण हमारे चारो ओर पाया जाने वाला सामाजिक, सांस्कृतिक व प्राकृतिक वातावरण है। सामाजिक वातावरण से तात्पर्य मानव के बीच परस्पर सम्बन्धों से है। सांस्कृतिक वातावरण में नैतिकता, पृथायें, भाषा, धर्म एवं परम्परायें इत्यादि आते हैं। प्राकृतिक वातावरण में जल, हवा, धरती, वृक्ष एवं वनस्पति आदि आते हैं। प्रकृति के इन अवयवों में स्वतः एक सन्तुलन होता है परन्तु इस जिज्ञासु एवं विकासोन्मुख मानव ने वैज्ञानिक एवं प्रौद्यागिकियों के कारण इस सन्तुलन को बिगाड़ कर पर्यावरण को प्रदूषित कर दिया है। ओजोन परत में छिद्र हो गया है जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है और ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है, जिससे महासागरों में बाढ़ आने का खतरा उत्पन्न हो गया है। इस प्रकार हमारे पर्यावरण में न केवल जल एवं थल ही प्रदूषित हो रहे हैं बल्कि अंतरिक्ष भी इससे अछूता नहीं रहा है। परिणामतः आज न केवल हमारा राष्ट्र ही इस समस्या का सामना कर रहा है अपितु सम्पूर्ण विश्व में यह समस्या उत्पन्न हो गयी है वैसे तो पर्यावरण की इस समस्या से निजात पाने के लिए सम्पूर्ण विश्व प्रयासरत है। विभिन्न सम्मेलनों, आयोगों अधिनियम का गठन किया गया है। परन्तु आवश्यकता है विश्व या देश के प्रत्येक व्यक्ति में चाहे वह बच्चा हो या वृद्ध उसको अपने वातावरण के प्रति सजगता, जागरुकता, चेतना और पर्यावरण मित्रता विकसित करने की, तभी इस गम्भीर समस्या का समाधान आसानीपूर्वक किया जा सकता है।

मुख्य शब्दः– पर्यावरण, मानव समाज, विकासोन्मुख मानव, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी।

Introduction

आज का मानव प्रगति की ओर उन्मुख है। वह प्रतिदिन वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक क्षेत्र में उन्नति कर विकास की ओर बढ़ रहा है। जहाँ मानव विकास की ओर इतना अधिक गतिशील है, वहीं दूसरी ओर विकास की यह गति हमारे लिए धीरे–धीरे घातक सिद्ध होती जा रही है जिस गति से प्रौद्योगिकी एवं वैज्ञानिक उन्नति हो रही है उसी गति से हमारा वातावरण भी प्रभावित होकर प्रदूषित होता जा रहा है। हमारे पर्यावरण में केवल जल एवं थल ही प्रदूषित नहीं हो रहे हैं बल्कि हमारा अंतरिक्ष भी इससे अछूता नहीं रहा है। परिणामतः आज केवल हमारा राष्ट्र ही इस विकास समस्या का सामना नहीं कर रहा है बल्कि पूरे विश्व में इस प्रकार की समस्या उत्पन्न हो रही है। 1972 में स्टॉकहोम में पर्यावरण पर आयोजित प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एक मत हो सभी ने पर्यावरण संरक्षण का मानवता की मूल आवश्यकता स्वीकार किया। 1992 में रियादै जनेरो ब्राजील में पृथ्वी शिखर सम्मेलन में मौसम परिवर्तन, वन विनाश इत्यादि महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई। इसके उपरान्त 1996 में द्वितीय संयुक्त

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

राष्ट्र मानव सम्मेलन (हैबिटेट–II), 1997 में क्योटो सम्मेलन व 2002 में पृथ्वी सम्मेलन II का आयोजन दक्षिणी अफ्रीका के जोहान्सवर्ग में किया गया। इन सम्मेलनों में इस बात पर सहमति हुई की पृथ्वी को बचाने की जिम्मेदारी सभी राष्ट्रों की है लेकिन इसमें होने वाले खर्चे का बोझ धनी देशों को अधिक उठाना चाहिए। पृथ्वी सम्मेलन द्वितीय की कार्य योजना में इस बात को शामिल किया गया है कि वर्ष 2020 तक रसायनों के उत्पादन तथा प्रयोग को मनुष्यों और पर्यावरण के लिए सुरक्षित बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया जाये। साथ ही सदस्यों ने खतरनाक कचरे के उचित प्रबंधन को बढ़ावा देने पर सहमति व्यक्त की। सम्मेलन के दौरान देशों के बीच सहमति बनी कि बिना सफाई कर रहे लोगों की संख्या वर्ष 2015 तक आधी कर दी जाए। स्वच्छ जल को लेकर भी इसी तरह का लक्ष्य रखा गया है। सम्मेलन में ऊर्जा प्रयोग में कुशलता बढ़ाने और स्वच्छ ऊर्जा का इस्तेमाल बढ़ाने का भी संकल्प व्यक्त किया गया। परन्तु देखना यह है कि विकास की दौड़ में यह प्रावधान कहीं मृग मरीचिका बन न रह जाए। पर्यावरण हमारे चारो ओर पाया जाने वाला सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक वातावरण है जो हमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। सामाजिक वातावरण के अन्तर्गत समाज, समाज की मान्यतायें, सामाजिक ढाँचा सांस्कृतिक वातावरण के अन्तर्गत, नैतिकता, भाषा, धर्म, प्रथायें, परम्परायें और प्राकृतिक वातावरण के अन्तर्गत वायु, जल, भूमि, वन, तापमान, मौसम एवं भूमि में पायी जाने वाली खनिज सम्पदायें आती हैं। प्रकृति के इन विभिन्न अवयवों में स्वतः एक सन्तुलन होता है लेकिन इस जिाासु एवं विकासोन्मुख मानव ने वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक गतियों के कारण इस संतुलन को बिगाड़कर पर्यावरण को प्रदूषित कर दिया है व इस पर्यावरण प्रदूषण समस्या ने सम्पूर्ण विश्व को हिलाकर रख दिया है।

वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण विश्व की ज्वलंत समस्या है जिसके कारण मानव जाति का विनाश भी हो सकता है। महात्मा गांधी ने कहा था – '' प्रकृति के पास सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन हैं परन्तु सभी के लालच की पूर्ति नहीं अर्थात यदि केवल मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की बात हो तो प्रकृति सबकी आवश्यकतायें पूरी कर सकती है। परन्तु जब कुछ लोगों के लालच की बात आती है तो प्रकृति विफल हो जाती है। ये लालची लोग प्रकृति का दोहन करके प्राकृतिक सम्पदा से भौतिक सुख सुविधा के साधन व भौतिक धन एकत्र करने लगते हैं जिससे मूल आवश्यकताओं की पूर्ति बाधित हो जाती है। इस प्रकार पर्यावरण की समस्याओं के निराकरण तथा पर्यावरण सुधार की योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए आपेक्षित जन सहयोग प्राप्त करना आवश्यक है। प्राकृतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक दशाओं का समन्वित रूप ही पर्यावरण है अर्थात् सम्पूर्ण पर्यावरण को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं –

1. प्राकृतिक वातावरण, 2. सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण। हमारे वेदों, पुराणों में प्रकृति को माँ की संज्ञा दी गयी है। ऋषि मुनियों के समय से चली आ रही स्वच्छ एवं निर्मल नदी गंगा को भी आज अपने को शुद्ध करवाने की आवश्यकता पड़ गयी है तो फिर छोटी–छोटी नदियों, जलाशयों, पोखरों आदि के प्रदूषण की कल्पना करना असम्भव नहीं होगा। आज हम औद्योगिक रासायनिक अवशिष्ट, मृत जानवर, घरों की गंदगी, सभी प्रकार की व्यर्थ सामग्री नदियों एवं जलाशयों में डाल देते हैं और इस प्राकृतिक शुद्ध जल के अशुद्धिकरण के बारे में कभी कल्पना मात्र भी नहीं करते,

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

फलतः अनेकों बीमारियों व महामारियों का सामना करते हैं और इस प्रकार हम चरितार्थ कर देते है राम तेरी गंगा मैली युक्ति को।

जल ही नहीं हमने अपने वातावरण की प्राकृतिक मुक्त वायु को भी अत्यधिक वाहनों के प्रयोग, उद्योगों, बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और वन विनाश से प्रदूषित कर दिया है। वाहनों से निकलने वाले धुएँ में कार्बन मोनो ऑक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड, लेड आक्साइड इत्यादि अनेकों हानिकारक गैसें होती हैं जो हमारे वातावरण की वायु प्रदूषित कर देती हैं। वायु, बिजलीघरों के संयंत्रों से बड़ी मात्रा में सल्फर डाई आक्साइड, कालिख एवं राख आदि निकलती है। इससे हमारा वायुमण्डल तो दूषित होता ही है साथ में विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ भी होती है। लकड़ी, कोयला और खनिज तेलों का प्रयोग ईंधन के रूप में करने से वातावरण में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा दिन व दिन बढ़ती जा रही है। वनों का विनाश होने से वातावरण में कार्बन डाई ऑक्साइड का अवशोषण पेड़–पौधों द्वारा नहीं हो पा रहा है और न ही पेड़–पौधों द्वारा ऑक्सीजन पर्याप्त मात्रा में मिल रही है। अतः धीरे–धीरे पर्यावरण में यह संतुलन बिगड़ता जा रहा है।

वैज्ञानिकों के अनुसार प्रत्येक देश में 33 प्रतिशत वनों की आवश्यकता होती है परन्तु वर्तमान में हमारे देश में 12.55 प्रतिशत ही वन हैं। इसके अतिरिक्त पर्यावरण विद्ों का मानना है कि हमारे वातावरण में कुछ ऊँचाई पर ओजोन की एक परत है जो हमारा सूर्य की किरणों से बचाव करके हमें हानिरहित धूप प्रदान करती है। औद्योगिक क्रियाओं से निकलने वाली रासायनिक गैसें ओजोन की इस परत से प्रतिक्रिया करके समाप्त कर रही हैं जिससे तापमान बढ़ रहा और ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है। इस प्रकार कुछ समय बाद एक ऐसी स्थिति आ सकती है कि सम्पूर्ण पृथ्वी महासागरों में डूब जायेगी और हम काल के गाल में समा जायेंगे। शिकागो विश्वविद्यालय के पर्यावरणीय वैज्ञानिक डॉ0 वी0 रामानाथ्न के अनुसार ''पृथ्वी का औसत तापमान जो ग्रीन हाउस गैसों के कारण लगभग 11.5 डिग्री सेंटीग्रेट बढ़ चुका है और अब प्रदूषणकारी गैसें वायुमण्डल में न भी छोड़ी जाएँ तो वर्ष 2030 तक 1980 की अपेक्षा पृथ्वी का तापमान 5 डिग्री सेंटीग्रेट तक बढ़ जायेगा। इस तापमान वृद्धि के परिणाम भयानक होंगे। बढ़ते तापमान से उत्तरी अमेरिका में जलवृष्टि अतिक्षीण हो जाएगी एवं भयंकर गर्म हवाओं का प्रकोप होगा। संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरी प्रान्तों में वीभत्स समुद्री तूफानों के आने की सम्भावनायें बढ़ जायेंगी। बढ़े तापमान के कारण ध्रुवों की बर्फ पिघलने लगेगी, जिससे समुद्र तल ऊपर उठ जायेगा, परिणामस्वरूप मालद्वीव और बांग्लादेश जैसे अनेक देश जलमग्न हो जायेंगे। पर्यावरण दस्तावेजों के अनुसार वायु प्रदूषण फैलाने में वाहन 60 प्रतिशत उत्तरदायी है। पिछले एक दशक में वाहनों की संख्या में अत्याधिक वद्धि हुई है। इस समय लगभग तीन करोड़ वाहन देश की सड़कों में दौड़ रहे हैं, जिसमें लगभग डेढ़ करोड़ दोपहिया वाहन हैं। भारत के प्रमुख महानगरों में वायु प्रदूषण का स्तर निम्न तालिका से समझा जा सकता है–

2005–06 में प्रमुख महानगरों में वायु प्रदूषण का स्तर

महानगर	सल्फर डाई आक्साइड	कार्बन मोनो आक्साइड	नाइट्रोजन आक्साइड	निलम्बित कणकीय पदार्थ
दिल्ली	50000	275000	75000	120000

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

बम्बई	160000	190000	60000	60000
कलकत्ता	30000	180000	44200	210000

भारत में वाहन उत्सर्जन की स्थिति

वाहन	ईधन खपत (लाख टन)	कार्बन मोनो आक्साइड	हाइड्रोकार्बन (लाख टन)	नाइट्रोजन आक्साइड
मोटर कार	15.9	4.42	0.7	0.45
स्कूटर मोटर साइकिल (टू स्ट्रोक)	19	6.1	4.27	0.07
मोपेड	4.8	1.89	1.39	0.03
डी0 वाहन	101.5	4.98	1.78	8.00

आजकल प्रचार एवं प्रसार हेतु ऊँची आवाजों में माइक एवं लाउडस्पीकर बजाने की प्रतियोगिता की होड़ सड़कों में चलते समय वाहनों में अधिक ध्वनि संकेतों का प्रयोग कितना असहनीय, अप्रिय एवं कर्कश होता है। शायद यह कल्पना करना मानव भूल ही कहा जाता है। इस ध्वनि का हमारे जीवन में प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

आज मानव का केवल प्राकृतिक वातावरण ही नहीं वरन् सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण भी प्रदूषित हो गया है जिससे हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। हर व्यक्ति का मस्तिष्क इतना अधिक प्रदूषित होता जा रहा है कि केवल स्वार्थ एवं अर्थ को प्राप्त कर भौतिक सुखों को प्राप्त करना ही इस जीवन का अंतिम उद्देश्य समझता है। अपनी संस्कृति व सभ्यता के अनेकों गुणों जैसे प्रेम, सहद्यता, अतिथि देव, बड़ों का सम्मान, ईमानदारी, विश्वबंधुता, आदि का धीरे–धीरे पतन होता जा रहा है और भ्रष्टाचार, बेईमानी, स्वार्थ जैसी नवीन विशेषताओं से परिपूर्ण एक नयीं संस्कृति का जन्म हो रहा है। जिस प्रकार प्रगति के नाम पर औद्योगिक प्रदूषण, वायु प्रदूषण आदि विकराल रूप धारण कर रहे हैं उसी प्रकार वैचारिक प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। यदि इसकी रोकथाम न की गयी तो देश आसुरी संस्कृति की ओर बढ़ता ही चला जायेगा।

इस प्रकार पर्यावरण असंतुलन की समस्या परोक्ष या अपरोक्ष रूप से अशिक्षा और अविवेक का परिणाम है। सम्पूर्ण विश्व इस समस्या के प्रति गम्भीर है। शिक्षा इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है और हरित एवं स्वच्छ समाज का निर्माण कर सकती है। विश्व स्तर में पर्यावरण के सम्बन्ध में सम्पन्न हुए प्रमुख सम्मेलन निम्नवत् हैं –

1. मानव पर्यावरण स्टाक होम सम्मेलन, 1972
2. नैरोबी सम्मेलन (नैरोबी घोषणा), 1982
3. ओजोन परत संरक्षण वियना अभिसमय, 1985
4. ओजोन परत संरक्षण वियना अभिसमय, 1985 द्वितीय
5. संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण तथा विकास सम्मेलन (पृथ्वी सम्मेलन) 1989

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

6. द्वितीय संयुक्त राष्ट्र मानव सम्मेलन (हैबीटेट–II) 1996
7. क्योटो सम्मेलन 1997
8. पृथ्वी सम्मेलन–II 2002

भारतीय सम्मेलन में यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण के बारे में कुछ नहीं कहा गया है तथापि जिस समाजवादी राज्य की परिकल्पना की गयी है वह तभी सम्भव है जब सभी का जीवन स्तर ऊँचा हो। यह सत्य है कि सभी का जीवन स्तर स्वच्छ पर्यावरण में ही सम्भव है। 42वें संविधान संशोधन के पूर्व भारतीय संविधान में अनुच्छेद 47 ही एक ऐसा अनुच्छेद था जो पर्यावरण के बारे में सावधान करता था। अनुच्छेद 47 के अनुसार ''राज्य अपने स्तर को पोषाहार और जीवन स्तर को ऊँचा करने और लोक स्वास्थ्य को सुधार को अपने प्राथमिक कर्तव्यों में मानेगा और राज्य विशिष्टतया मादक प्रयों और स्वास्थ्य के लिए हानिकर औषधियों के औषधीय प्रयोजन से भिन्न उपभोग का प्रतिषेध करने का प्रयास करेगा। 42वें संविधान संशोधन 1976 के द्वारा अनुच्छेद 48(क) व अनुच्छेद 51(क) जोड़ा गया है।

अनुच्छेद 48(क) के तहत राज्य देश के पर्यावरण के संरक्षण तथा उसमें संवर्धन और वन तथा वन्यजीवों की रक्षा करेगा।

अनुच्छेद 51(क) खण्ड (छ) के अनुसार – ''भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह प्राकृतिक पर्यावरण, जिसके अन्तर्गत वन्यझील, नदी और वन्यजीव हैं, उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे।

इसके अतिरिक्त केन्द्र व राज्य सरकारों में पर्यावरण की सुरक्षा के लिए कुछ और महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं जिनका संक्षेप में उल्लेख निम्न है –

1. गोबिन्द बल्लभ पंत हिमालय पर्यावरण एवं विकास संस्था की स्थापना–1988 अल्मोड़ा।
2. राष्ट्रीय बन्जर भूमि विकास बोर्ड – 1985
3. राष्ट्रीय वन तथा वन्य जीवन सम्बन्धी नीति का निर्माण–1988
4. हरित ईंधन योजना – 1995 से दिल्ली, कलकत्ता व चेन्नई में प्रारम्भ।
5. गंगा कार्य योजना – 1985 से 267 जिले में चल रही है।
6. राष्ट्रीय पर्यावरण फेलोशिप योजना–1995 से प्रारम्भ।

पर्यावरण सम्बन्धी पुरस्कार :–

पुरस्कार	प्रारम्भ करने का वर्ष
1. इन्दिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार	1987
2. इन्दिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र पुरस्कार	1986
3. महावृक्ष पुरस्कार	1993–94
4. राजीव गांधी पर्यावरण पुरस्कार	1993

पर्यावरण से सम्बन्धित दिवस :–

1. वन महोत्सव	1 जुलाई

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

2.	विश्व जनसंख्या दिवस	11 जुलाई
3.	वन्य जीव सप्ताह	1 से 7 अक्टूबर
4.	पर्यावरण मास	19 नवम्बर से 18 दिसम्बर
5.	विश्व पर्यावरण निवारण दिवस	2 दिसम्बर
6.	पृथ्वी दिवस	22 अप्रैल
7.	विश्व पर्यावरण दिवस	5 जून

परन्तु यदि हम वर्तमान में सोंचे कि कौन सी वस्तु प्रदूषण मुक्त है तो वह सिर्फ भ्रम होगा ऐसा इसलिए क्योंकि वर्तमान में जल, वायु, मृदा वनस्पतियाँ सभी प्रदूषित हैं। ऐसे में स्वस्थ होने की कल्पना करना रेत में महल बनाने के समान है। जब वर्तमान में हमारा यह हाल है तो भावी पीढ़ी का क्या होगा? हमारे द्वारा की गई प्राकृतिक छेड़–छाड़ ने पूर्वजों की विरासत को नष्ट कर डाला है और नयी पीढ़ी के लिए छोड़ा है तो सिर्फ प्रदूषित वातावरण जिसमें इन्सान तो क्या कीड़े–मकोड़े भी जीवित नहीं रह सकते। हमें वातावरण को प्रदूषण मुक्त करने का भरसक प्रयास करना चाहिए क्योंकि असम्भव पर उत्साह से विजय पायी जा सकती है अन्यथा इसका परिणाम और भी घातक हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. सुनीता बंसल, ग्रामीण पेयजल और स्वास्थ्य परिचर्चा योजना 2006, योजना भवन, नई दिल्ली।
2. एस0 के0 अरोड़ा एवं संजय ध्यानी, 21वीं सदी की चुनौती, स्वच्छ पेयजल योजना 2006
3. विजय पी0 सिंह, राम एन0 यादव, वेस्ट वाटर ट्रीटमेण्ट एण्ड वेस्ट मैनेजमेंट एलाइड पब्लिकेशन प्रा0 लि0, नई दिल्ली।
4. विजय प्रताप विश्वकर्मा, जलचक्र की अवधारणा, प्रतियोगिता दर्पण, मार्च 2000, उपकार प्रकाशन, आगरा।
5. इन्वायरमेण्ट ऐट जीस्यूज एण्ड थमर्स, ए0पी0एच0 पब्लिकेशन कारपोरेशन, 5 अन्सारी रोड, नई दिल्ली 1991
6. नेचर कन्जरवेशन एण्ड सब्सटेनेवल डेवलेपमेंट इन इण्डिया, प्रकाश गेट, रावत पब्लिकेशन, जयपुर एण्ड नई दिल्ली, 2004
7. भारत, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2004–05
8. उमा टण्डन एवं अरुण गुप्ता, उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षक, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।
9. इण्डिया टुडे, मार्च 2004
10. इकोनामिक टाईम्स, मार्च 2002
11. इण्डिया टुडे, नवम्बर 2002
12. दैनिक जागरण, 30 जुलाई, 2002
13. टाइम्स आफ इण्डिया, अगस्त 2001
14. इकोनामिक टाइम्स, मार्च 2001